ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक चिंतन का समीक्षात्मक विश्लेशण

डॉ. मनदीप खालसा प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्षए बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जिला– धमतरी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अर्थचिंतन उच्च कोटि का भारतीयकरण, सांस्कृतिक राश्ट्रवाद, आर्थिक लोकतंत्र, सभ्यता और परिस्थतियों के अनुरूप एकात्म मानववाद पर आधारित हैं। उनके अनुसार किसी देश की अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो मानव के मानवत्व को समाप्त न करें। अर्थव्यवस्था का लक्ष्य लोगों के भरण–पोशण जीवन के विकास और राष्ट्र की धारणा जिनकी आवश्यकता होती हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार प्रत्येक देश में इस प्रश्न पर विचार किया गया हैं कि उत्पादन उपभोग का अनुसरण करे अथवा उपभोग उत्पाद का दर्शन सामने रखा वह भारतीय मनीशा के युगों–युगों के तत्व चिंतन का प्रतीक हैं। सर्वत्र मूलभूत एकता का दर्शन ही एकात्म मानववाद है। पंडित दीनदयाल जी की यह मान्यता थी कि सृष्टि का स्वरूप बाहर में कितना विविधतापूर्ण हो लेकिन वह एकात्मवादी है। उसके विविध रूपों में परस्पर सहयोग सांमजस्य और परिपूरकता का भाव मुख्य हैं। पंडित जी के अनुसार व्यक्ति और समाज में कोई विरोध नहीं हैं। वे व्यक्ति की चार मूल आंकाक्षाओं अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष में कोई विरोध नहीं देखते। वे व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को आवश्यक मानते हैं। किंतु मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके संतुष्टि को प्राप्त नहीं कर सकता।

उद्देश्य :– पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का आर्थिक चिंतन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :– पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एक राजनेता के साथ–साथ पत्रकार, लेखक, संगठनकर्ता एवं सजग इतिहासकार,अर्थशास्त्री एवं भाषाविद् थें। उन्होनें विश्व को एक नया मार्ग एकात्म मानववाद दिया। उनका जीवन व विचार रा ट्रवाद को बल देना वाला हैं। उनके आर्थिक चिंतन एक स्वतंत्र विचारधारा हैं जो उन्होनें देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपने स्वतंत्र विचार प्रस्तुत किये। उनकी विचारधारा देश के आर्थिक विकास में सहायक हो सकती हैं। उनके आर्थिक सिद्धात हमारी आर्थिक समस्याओं का समाधान करने में सहायक हो सकते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अर्थचिंतन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :– मनु य की आवश्यकताऐं अन्नत हैं, उनकी निंरतर पूर्ति होनी चाहिए। सर्वप्रथम इच्छा जन्म लेती हैं तदुपरान्त उनको पूरा करने के लिए साधन जुटाये जाते हैं। वर्तमान में जो उत्पादित किया जा रहा हैं उसके लिए उपभोग की इच्छा उत्पन्न की जाती हैं। बाजार में पूर्ति बढ़ाने की जगह पूर्ति के लिए बाजार तैयार किया जाता हैं।उनके अनुसार अर्थव्यवस्था का लक्ष्य लोगों के भरण–पोषण, जीवन के विकास एवं राष्ट्र के लिए भौतिक साधनो को उतना ही उत्पादन होना चाहिए जितनी आवश्यकता हैं। पंडित दीनदयाल जी के अनुसार देश को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उत्पादन उपभोग का अनुसरण करें अथवा उपभोग उत्पाद का ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रकृति के संतुलित दोहन के पक्षधर थें। वे प्रकृति का शो ाण नही उसका उपयोग चाहते हैं। उनके अनुसार प्राकृतिक सम्पदा सीमित है, यदि उसके उत्पादन को असीमित रूप से बढ़ाया जायेगा तो प्राकृतिक सम्पदा लम्बे समय तक साथ नहीं देगी। वर्तमान अर्थव्यवस्था इसे असंतुलित कर रही हैं हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जिसकी वह पूर्ति कर सकें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय देश के कृषि अर्थव्यवस्था पर सजग दृष्टि रखते थें। उनके अनुसार बड़ी अर्थव्यवस्था विकास के लिए उचित नहीं हैं कृषि जोत का स्वामित्व स्वयं कृषक होना चाहिए । उन्होनें सहकारी कृषि पर बल दिया । उनके अनुसार खाद्यान्न व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण नहीं होना चाहिए। वे भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वावलंबन के पक्ष में थें। उनके अनुसार मशीन मनु य की सहायक हो सकती हैं। प्रतिस्पर्धी नही। मशीन के उपयोग मे बेरोजगारी बढ़ती हैं तो उसका उपयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए।

उनके अनुसार कुटीर उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार हैं एवं विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था विकास के लिए आवश्यक हैं। उनके अनुसार हमें ""कमाने वाला खायेगा"" की जगह खाने वाला कमायेगा का लक्ष्य रखकर भारत की अर्थरचना करना चाहिए वे चाहते थें कि नया युग श्रम का युग हो। उनके अनुसार यदि किसी कारखाने की पूर्ण उत्पादन क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा तो वह घाटे का सौदा हैं। उन्होनें भारतीय रूपये के अवमूल्यन का विरोध किया वे 1960 में पी.एल 480 ,1963 में स्वर्ण नियंत्रण कानून,1966 में भारतीय रूपये के अवमूल्यन पर विरोध प्रकट किया। उनकी पुस्तक भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन इसी पर आधारित हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी पंचवर्शीय योजनाओं के समीक्षक रहें उन्होनें इस विषय पर अपनी पुस्तक की " दो योजनाएं वायदे अनुपालन आसार 1958" उनकी यह पुस्तक प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्शीय योजना का तार्किक विश्लेषण करती हैं एवं सर्वागीण विकास पर एक आकलन प्रस्तुत करती हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने तृतीय एवं चतुर्थ पंचवर्शीय योजना अपने आलेख के माध्यम से समीक्षा की। पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी अर्थव्यवस्था के तेजी से विकास के पक्ष में नहीं थें वह अर्थव्यवस्था के विकास के लिए सामान्य एवं क्रमिक विकास के पक्ष में थें।

पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी देश की स्वतंत्रता का परितो ाण करने वाले , जनता की समृद्वि को बढ़ाने वाले अपने स्वतंत्र आर्थिक सिंद्धात प्रस्तुत किये उन्हे ना तो रूस की सरकारी पूॅजीवादी प्रणाली पंसद थी ना अमेरिका की मुक्त अर्थव्यवस्था। वे दोनों के विरोधी थें। उन्होनें मानव के संतुलित विकास पर बल दिया ।

निश्कर्श :– उन्होनें राजनीति को समाज कल्याण के मार्ग के रूप में चुना हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने विचारों को पत्रकारिता के माध्यम से जन–जन तक पहुचाने का कार्य किया। उन्होनें पत्रकारिता के माध्यम से रा ट्रवादी जनमत निर्माण करने महत्वपूर्ण कार्य किया था । उनके अनुसार राष्ट्रभक्ति की भावना का निर्माण करने और उसको साकार रूप देने का श्रेय राष्ट्र की संस्कृति का हैं वह राष्ट्र की संकुचित सीमाओं को मोड़कर मानव की एकात्मकता का अनुभव करना हैं अतः संस्कृति को स्वतंत्रता आवश्यक हैं।

उन्होनें सीमित साधनों के अधिकतम उपयोग पर बल दिया। उन्होने सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का केन्द्र मानव होना चाहिए, भौतिक चीजें मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं पर बल दिया। उनकी प्रमुख पुस्तकें :–

1. पॉलीटिकल डायरी
2. राष्ट्र चिंतन
3. दो योजनाएं : वायदे अनुपालन आसार
4. भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा
5. अवमूल्यन एक महान क्षति

संदर्भ ग्रथ सूची :–

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन– बलवंत नारायण जोग
2. पुरखा के सुरता –हमर पं. दीनदयाल उपाध्याय – अवधेश कुमार जैन
3. एकात्म अर्थनीति– श्री शरद कुलकर्णी
4. राष्ट्र की अवधारणा – श्री सी.पी. भिशीकर
5. एकात्म मानव दर्शन – श्री वी.वी. नैने